पुस्तक समीक्षा

पढ़ना, ज़रा सोचना
शिक्षा में पढ़ने और सोचने की केंद्रीय भूमिका का समीक्षात्मक वर्णन

प्रभात कुमार*

पुस्तक का नाम — *पढ़ना, ज़रा सोचना*
लेखक का नाम — मारियो वर्गास लियोसा
प्रकाशक — जुगनू प्रकाशन, नयी दिल्ली
प्रकाशन वर्ष — 2019

तकनीक के असीम विकास ने वर्तमान पीढ़ी के पढ़ने की आदत और समझने की चिंता को बढ़ा दिया है। मारियो वर्गास लियोसा, पेरू के लेखक ने 2010 में साहित्य के नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने पर कहा था कि लिखने के लिए पढ़ना ज़रूरी है। पाँच साल की उम्र में पढ़ना सीखने को वर्गास लियोसा अपने जीवन की सबसे महत्वपूर्ण बात मानते हैं। कई बोध-क्षमताओं से युक्त पढ़ना कौशल के अर्थ को सामान्यतः आज के शिक्षक नहीं समझते हैं। पढ़ने के प्रति बच्चों की अरुचि ही इतनी विस्तार ले चुकी है कि बात पढ़ कर समझने तक पहुँचने से पहले ही दम तोड़ देती है। विकास के वर्तमान स्वरूप में संचार माध्यमों ने इतनी तरक्की कर ली है कि बच्चों के पास सूचनाएँ प्रतिपल असीमित संख्या में पहुँच रही हैं। सभी सूचनाओं से परिचित होने की आकांक्षा में बच्चे पढ़ने और पढ़कर पूर्णतः समझने की स्थिति से लगातार दूर होते जा रहे हैं। इस दूरी ने आज सामाजिक सद्भाव और उसकी बुनावट को भी गहरे स्तर पर प्रभावित करना प्रारंभ किया है। पढ़ने की आदत का अभाव और दूसरी तरफ़, समझने की चिंता किए बिना पढ़ते जाना एवं इन दोनों स्थितियों के समक्ष उत्पन्न होने वाली प्रत्यक्ष-परोक्ष समस्या का भान शायद देश के प्रतिष्ठित शिक्षाविदों में शुमार किए जाने वाले लेखक को रहा होगा और शायद उसी का प्रतिफल थी यह किताब— 'पढ़ना, ज़रा सोचना'।

सात अध्यायों में विस्तारित लेती लेखक की बातचीत, 'पढ़ना कौशल' की समस्त बारीकियों को हमारे मन तक पहुँचाने में सफल होती है। पुस्तक के नाम में ही 'ज' वर्ण में नुक्ता का प्रयोग कर लेखक पढ़ने की अहमियत के दौरान सोचने की महत्ता को रेखांकित कर देते हैं।

प्रथम अध्याय में लेखक इस बात की पड़ताल करने की कोशिश करते हैं कि बच्चे जब पढ़ना प्रारंभ करते हैं तो क्या किसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर करते हैं? या यह एक अनायास शुरुआत भर होती है या एक सायास प्रयास के द्वारा यह प्रारंभ करवाया जाता है। यह अध्याय

**असिस्टेंट प्रोफ़ेसर*, मेघराज मेमोरियल बी.एड. कॉलेज, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, बेगूसराय, बिहार 851 112

© NCERT not to be republished

पढ़ने के उद्देश्य पर चिंतन करने की अपील करता है। पढ़ने के उद्देश्य को लेकर लेखक प्रथम बात जो समझाने का प्रयास करता है, वह है कि पाठक द्वारा यह समझा जाना कि हम जो पढ़ते हैं वह किसी न किसी का लिखा हुआ पढ़ते हैं; ज़रूरी नहीं है कि लिखी हुई सामग्री पाठक के संदर्भानुकूल ही हो; पढ़ने के दूसरे उद्देश्य में शामिल है— अर्थ ढूँढ़ना। पढ़ने के तीसरे उद्देश्य में शामिल है— उस सुख की तलाश जो केवल साहित्य दे सकता है।

दूसरे अध्याय का नाम है— पढ़ना और पढ़ाई। लेखक अपने अनुभव के आधार पर यह बताना चाहता है कि पाठ्यक्रम के अंतर्गत उल्लिखित किताब को पढ़ने की बजाय, उसकी पढ़ाई करते हैं। क्योंकि उस किताब का सीधा संबंध परीक्षा से है। पढ़ाई का आशय होता है, परीक्षा की तैयारी से। पढ़ना हर विद्यार्थी जानता है, परंतु पढ़ाई एक प्रतियोगिता है। लेखक किताबों की संस्कृति एवं किताबों के प्रति माता-पिता और आम लोगों की समझ पर भी विस्तार से अपनी बात रखता है। लेखक किताबों के संदर्भ में अपनाई जाने वाली साधनवादी दृष्टि का विरोध करता है।

तीसरे अध्याय की शुरुआत लेखक पढ़ने की शिक्षा में इस्तेमाल होने वाले वाचन, सस्वर वाचन, आदर्श वाचन जैसे शब्दों पर प्रकाश डालने से करता है। इस अध्याय में लेखक विभिन्न भाषाओं में किताबें पढ़ने के चलन का भी उल्लेख करता है। लेखक का मानना है कि मलयालम और बांग्ला में किताबें पढ़ने का चलन हिंदी से ज़्यादा है। इस तरह के अंतर के पीछे जो कारण लेखक को लगता है, वह है— साक्षरता और शिक्षा का प्रसार, सांस्कृतिक वातावरण आदि। हिंदी भाषी क्षेत्रों में किताबें पढ़ने के कम चलन के पीछे लेखक को पुस्तकालयों का अभाव भी एक महत्वपूर्ण कारण नज़र आता है।

चौथे अध्याय की शुरुआत लेखक इस प्रश्न के उत्तर की तलाश से प्रारंभ करता है कि 'क्या पढ़ना सिर्फ़ एक कौशल है?' लेखक साइकिल चलाने की दक्षता को पढ़ना कौशल से अलग करता है। पढ़ना एक विशेष कौशल में गिना जाता है, क्योंकि इसमें समझना भी शामिल है। लेखक इस बात को इस अध्याय में बहुत गंभीरता से उठाता है कि अगर शिक्षा में सोचने को नदारद कर सिर्फ़ पढ़ना ही शामिल किया जाएगा तो इसके गंभीर परिणाम सामाजिक दुर्घटनाओं के रूप में हो सकते हैं एवं जो हो भी रहे हैं। इन दुर्घटनाओं में दूसरे की बात समझे बिना अपनी प्रतिक्रिया दाग देना, मर्म से वंचित रहना आदि शामिल हैं। पढ़ने के समकालीन संदर्भों पर गहराई से विचार करते हुए लेखक इस सवाल से टकराता है कि पढ़ने-लिखने जैसी प्रक्रियाओं से उपजी मानसिक सक्रियता किस हद तक स्वयं अपने प्रति जाग्रत होती है? अर्थात् किस हद तक समीक्षात्मक चेतना का विकास होता है? लेखक एकाग्रता और मानसिक शांति को समीक्षात्मक चेतना के विकास के लिए मूल तत्व मानता है एवं इन तत्वों को पढ़ने की शिक्षा में शामिल करना कठिन भी नहीं है। समाज धीमी गति से चलने को पिछड़ेपन की निशानी मानता है। शिक्षकों के लिए धीमे चलना कठिन हो गया है। पढ़ने में डिजिटल माध्यमों की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए लेखक इस दिशा में शोध की ज़रूरत पर बल देते हैं। डिजिटल माध्यमों से पढ़ने में ऐसे कुछ महत्वपूर्ण तत्व अपेक्षाकृत कमज़ोर स्थिति में नज़र आते हैं, जो कागज़ पर छपी हुई किताब पढ़ने में संभव बनते हैं। गहन रूप से पढ़ना समीक्षात्मक सोच को संभव बनाता है, जिसे डिजिटल माध्यमों के विद्यार्थियों में विकसित करना मुश्किल पाया गया है। लेखक

© NCERT not to be republished

यह मानता है कि वाचन ही वह तत्व है जो पढ़ने में समझने और सोचते जाने की जगह रफ़्तार और प्रवाह को तरजीह देता है। अंत में लेखक बच्चों को डिजिटल माध्यमों के ज़बरदस्त आकर्षण से बचाने की भी अपील करता है।

लेखक पाँचवें अध्याय की शुरुआत पढ़ाई और पढ़ने, इन दो शब्दों के बीच के सूक्ष्म अंतर को रेखांकित करने से करता है। लेखक यह बताता है कि पढ़ाई को किसी परीक्षा या नौकरी के लिए एक ज़रूरी साधन भर माना जाता है। पढ़ाई मेहनत की माँग करती है, यानी एक ऐसी चीज़ जो किसी दूरगामी उद्देश्य की खातिर एक तरह का बलिदान माँगती है। पढ़ाई अपने आप में उद्देश्य नहीं है। वर्तमान परिस्थिति ऐसे माहौल को रचती है जिसमें विद्यार्थी पढ़ाई की मेहनत करते रहने के लिए प्रेरित होता रहता है। पढ़ाई की निर्मम संस्कृति में बच्चा अपनी स्वतःस्फूर्त प्रेरणा से दूर हो जाता है। जीवन की राह पर अकेले आगे बढ़ने के खयाल से आतंकित हो, कदम-कदम पर मार्गदर्शन चाहता है। पढ़ाई की इस संस्कृति पर लेखक अपनी आपत्ति दर्ज करता है। *पंचतंत्र की कहानी* 'चार मित्रों की कहानी' को उदाहरणार्थ प्रस्तुत करते हुए लेखक यह बता पाने में पूर्णतः सफल होता है कि यह कहानी पढ़ाई की संस्कृति को विस्तार तो दे सकती है, परंतु पढ़ने का आनंद बिल्कुल नहीं। लेखक कहता है कि पढ़ने का सुख एक निरुद्देश्य सुख है। हमारी शिक्षा प्रणाली की समस्या यह है कि यह हर चीज़ में कोई दूरगामी उद्देश्य ढूँढ़ने की प्रवृत्ति का विकास करती है। यह प्रवृत्ति पढ़ने को समय की बर्बादी के रूप में देखने की प्रवृत्ति का विकास करती है। लेखक कहता है कि समय सिर्फ़ तभी फ़ायदेमंद निवेश के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए, जब वह परीक्षा की तैयारी या गृहकार्य करने में लगाया जा रहा हो, बल्कि इसे लाभकारी निवेश तब भी माना जाना चाहिए, जब इसका संबंध आनंद प्राप्ति से भी हो।

छठा अध्याय, इस बात पर बल देता है कि पढ़ने के दौरान अर्थ कहाँ से आता है? इससे आगे बढ़ने पर लेखक का चिंतन, अलग-अलग विधाओं, जैसे—कहानी, कविता आदि में अर्थ कैसे स्वरूप लेता है, की ओर बढ़ता है। लेखक इस बात की भी जाँच करता है कि क्या कहानी और कविता का समझ में आना एक-दूसरे से अलग है या मिलती-जुलती विधा है? लेखक इस जाँच-पड़ताल में पाते हैं कि कहानियों को समझने या उसके अर्थ लगा सकने की क्षमता जिस क्षण प्रारंभ होती है, उस क्षण की निर्मिति में कहानी में घटनाओं के वर्णन का एक निश्चित क्रम अपनी भूमिका निभाता है। यह क्रम ही पाठक को कहानी में उपस्थित पात्रों या घटनाओं से जुड़ जाने में मदद करता है। लेखक यह बात भी बताना चाहता है कि कहानी को अर्थ देने में पाठक की सक्रिय भूमिका होती है एवं यह सक्रियता इस बात पर निर्भर करती है कि पाठक की चेतना कैसी है तथा कहानी को समझने की उसकी कोशिश कितनी है। परंपरागत रूप से शिक्षकों की समझ है कि अक्षर-ज्ञान के बिना बच्चा पढ़ नहीं सकता, इस सोच साथ लेखक अपनी सहमति नहीं दिखाता। लेखक के लिए पढ़ना और अक्षरों से परिचय, दोनों भिन्न काम हैं। कविता के अर्थ की तलाश में रहने वाले पाठकों से लेखक कहता है कि कविता में आए हुए शब्द पर मन ही मन सोचते रहें। कविता की पढ़ाई का मतलब एक शिक्षक के लिए सिर्फ़ इतना होता है कि बच्चे हर शब्द का अर्थ याद कर लें। शिक्षक द्वारा अपनाए जाने वाली इस विधि से भी लेखक अपनी असहमति

© NCERT not to be republished

व्यक्त करता है। लेखक का मानना है कि शिक्षक द्वारा बताया गया अर्थ कविता को नष्ट करना है।

सातवें अध्याय में लेखक का ध्यान इस बात पर है कि बच्चों को अनिवार्य रूप से अच्छा बाल साहित्य उपलब्ध करवाया जाना चाहिए। विभिन्न स्तर के विद्यालयों के पुस्तकालयों में बाल साहित्य की कम उपलब्धता पर प्रकाश डालते हुए लेखक यह भी बताने का प्रयास करता है कि आज भी आम शिक्षक और माता-पिता बाल साहित्य के प्रति उदासीन ही दिखते हैं। लेखक इस बात की ओर भी संकेत करता है कि उस तरह के बाल साहित्य को रचा जाना चाहिए जिसमें स्वाभाविक रूप से बच्चों के मनोविज्ञान में उपस्थित रहने वाला कौतुहल, डरने का रोमांच एवं उसके समाप्त होने की खुशी, दुनिया को उलट-पलट कर देखने की अथक चाह एवं चीज़ों को बार-बार बिगाड़कर दोबारा बनता देखने का सुख जैसी चीज़ें उपलब्ध हों। लेखक खुद ही देश के जाने-माने शिक्षक-साहित्यकार हैं। कई शैक्षिक संस्थानों से लंबे समय तक जुड़े रहने के कारण बच्चों के लिए रचे जाने वाले बाल-साहित्य की प्रकृति से पूर्णतः सजग हैं। *गुलिवर की यात्राएँ* और *सिंदवाद की यात्राएँ* इन दो कृतियों के उल्लेख द्वारा लेखक उस विशेष सामग्री की ओर संकेत करता है, जिनकी बाल साहित्य में उपस्थिति बच्चों के मन को रमाने के लिए आवश्यक होती है। इस अध्याय की सबसे महत्वपूर्ण बातों में से एक बात जो लेखक शिक्षक, शिक्षाविद् एवं माता-पिता को समझाना चाहता है, वह है— बाल साहित्य को पढ़ने का उद्देश्य क्या है? परंपरा से यही समझा जाता रहा है कि बाल साहित्य से बच्चे को सीख अर्थात् नैतिक सीख मिलती है। नैतिक सीख को केंद्रीय महत्व देने की परंपरा इतनी गहरी रही है कि बाल साहित्य को पढ़ने से मिलने वाले दूसरे लाभों की ओर किसी ने ध्यान ही नहीं दिया। एक दूसरा उद्देश्य भी है, मनोरंजन। अगर देखा जाए तो पाते हैं कि *गुलिवर की यात्राएँ* बच्चों को सिर्फ़ मनोरंजन ही पेश करती हैं। लेखक कल्पना एवं विचार, दो ऐसे आयामों का वर्णन उद्देश्य के रूप में करते हैं, जो सीख और मनोरंजन दोनों ही श्रेणियों के अंतर्गत नहीं आते हुए भी बहुत महत्व के हैं। कल्पना एवं विचार दोनों का संबंध संज्ञान क्षमता से है। विश्व पटल पर धूम मचाने वाले बाल-साहित्य, जैसे— आर्थर-रैन्सम की पुस्तकमाला, *आस्ट्रिड लिंडग्रेन* की रचनाएँ या फिर मिनडर्ट डेजोंग की *व्हील ऑन द स्कूल* हो, लेखक इनका उल्लेख करते हुए हिंदी साहित्य में इस तरह की रचनाओं की घोर कमी की तरफ़ इशारा तो करता ही है, साथ ही साथ वर्तमान समय के साहित्यकारों के समक्ष इस तरह की रचनाओं को रचने की चुनौती भी प्रस्तुत करता है।

इस तरह हम पाते हैं कि 2019 में प्रकाशित यह किताब शिक्षा क्षेत्र से जुड़े सभी लोगों के लिए आवश्यक प्रतीत होती है। इस किताब को पढ़ने के बाद ऐसी आशा की जा सकती है कि शिक्षा के हितधारकों की मनःस्थिति में परिवर्तन निश्चित रूप से शिक्षा में गुणात्मक परिवर्तन का सहयोगी बनेगा। संपूर्ण किताब का गहन अध्ययन उन सूक्ष्म तत्वों को पकड़ने-समझने में विशेष रूप से बाल साहित्यकारों के लिए बहुत ही उपयोगी हो सकता है, जो रुचिकर बाल-साहित्य की रचना करना चाहते हैं। 64 पृष्ठों की यह छोटी किताब अपने उत्कृष्ट लेखन और चित्रांकन प्रस्तुति के साथ सभी के लिए पठनीय है।

© NCERT not to be republished